‘यही सच है’ : कथ्य और शिल्प
(मन्नू भण्डारी)

डॉ. रमा
प्राचार्या, हंसराज कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

1.0 प्रस्तावना

हिंदी कहानी के लिए साठ का दशक विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि इस दशक के अंतिम वर्षों में महिला कथाकारों का निर्णायक लेखन सामने आता है। शिवानी, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, राजी सेठ, प्रभा खेतान आदि ने स्त्री संघर्ष की अनगिनत छवियों को न केवल ईमानदारी से अपने कथासाहित्य में चित्रित किया बल्कि उनके अंदर के प्रतिरोध को सही स्वर भी दिया। मन्नू भण्डारी का कथासाहित्य अन्य की अपेक्षा अधिक चर्चित और लोकप्रिय हुआ। मन्नू भण्डारी का जीवन स्वयं कई तरह के विरोधाभासों और अंतर्विरोधों से गुजरा यही कारण है कि स्त्री जीवन का यथार्थ उनके साहित्य में अधिक मुखर रूप से सामने आया है। ‘यही सच है’ मन्नू भण्डारी की सबसे लोकप्रिय कहानी है जिसपर ‘रजनीगंधा’ नाम से फिल्म भी बनी और सफल भी हुई। घर की चार-दीवारी से बाहर निकलकर मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रूप से मुक्त दो पुरुषों के प्रेम में डूबी स्त्री मन की आंतरिक ऊहा-पोह को अभिव्यक्त करती यह कहानी स्त्री मनोविज्ञान को पहली बार बारीकी से सामने लाती है। ‘यही सच है’ कहानी में स्त्री के लिए बनाई गई सामाजिक नैतिकता और संस्कार को टूटते हुए दिखाया गया है।

2.0 अधिगम का उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप निम्नलिखित कार्य कर सकने में सक्षम हो जाएंगे:

(1) नई कहानी की भाव-भूमि से परिचित होंगे।

(2) मन्नू भण्डारी के साहित्य और जीवन से परिचित होंगे।

(3) साठ के दशक के महिला कथाकारों से परिचित होंगे।

(4) ‘यही सच है’ कहानी के कथ्य से परिचित होंगे।

(5) ‘यही सच है’ कहानी के शिल्प से परिचित होंगे।

(6) डायरी शैली लेखन से परिचित होंगे।

(7) हिंदी कहानी में बदलती स्त्री छवि को जान पाएंगे।

3. विषय प्रवेश

आधुनिक गद्य विधा की प्रमुख कहानीकार मन्नू भण्डारी का रचना संसार स्त्री विमर्श का पैरोकार है। उनकी कहानियाँ स्त्री अस्मिता को नई ऊँचाई तक ले जाने में सफल हैं। 3 अप्रैल 1931 को जन्मी मन्नू भंडारी साठ के दशक की हिंदी कहानी की प्रमुख महिला कथाकार हैं। उनकी कहानियाँ आधुनिक जीवन शैली से उपजी त्रासदी, अवसाद, संबंधों की टूटन, विवाहेतर प्रेम संबंध आदि को चित्रित करने में सफल हैं। मुक्त होती स्त्री की वैचारिक उड़ान और आर्थिक रूप से सम्पन्न होने की इच्छा से बिखरती विवाह संस्था की अभिव्यक्ति 'आपका बंटी' में मार्मिकता से अभिव्यक्त हुई है। मध्यवर्ग की सामाजिक, आर्थिक विसंगति पर प्रहार करता उनका उपन्यास 'महाभोज' अपनी सघन अनुभूति के कारण न केवल उपन्यास के रूप में चर्चित हुआ बल्कि उसके नाट्य रूपान्तरण को भी बहुत पसंद किया गया। आज़ाद भारत में स्त्रियों के लिए जो सामाजिक आंदोलन हुए उससे महिला अधिकारों और अस्मिता को गति मिली जिसकी छाप हिंदी कहानियों पर भी दिखाई देती है। साठ के दशक में महिला कथाकारों ने स्त्री देह, मन, विचार को सामाजिक बंधनों से मुक्त कर स्त्रियों को अपने लिए स्वतंत्र जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया। लैंगिक समानता के अधिकार को उठाते हुए और खुद को भी पुरुषों के बराबर खड़ा करने की लड़ाई लड़ी। मन्नू भण्डारी की अधिकतर कहानियाँ और उपन्यास स्त्री त्रासदी की अंतर्कथा हैं। आर्थिक रूप से सम्पन्न स्त्री जैसे ही अपने जीवन को सामाजिक और पारिवारिक बंधन से मुक्त करने की कोशिश करती है उसका संघर्ष बढ़ जाता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री को उड़ान भरने से पहले ही उसके पर काट देती है। मन्नू भण्डारी इस व्यवस्था के सामने तन कर खड़ी हो जाती हैं। उन्हें किसी भी प्रकार का डर नहीं है। अगर हम यह मान लें कि स्त्री विमर्श भोगे हुए यथार्थ से उपजा है तो मन्नू भण्डारी का कथासाहित्य और प्रासंगिक और यथार्थवादी साबित हो जाता है क्योंकि लोकप्रिय कथाकार राजेन्द्र यादव से उन्होंने तब विवाह किया जब वह बेरोजगार थे जबकि मन्नू भण्डारी नौकरी में थीं। स्त्रियों को लेकर राजेन्द्र यादव का जीवन विवादित रहा। मन्नू भण्डारी की कहानियों में संबंधों की जो टूटन दिखायी देती है वह उनके जीवन से बहुत मिलती-जुलती है। एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, आँखों देखा झूठ, त्रिशंकु तथा यही सच है उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। मन्नू भण्डारी की कहानियों में

नगरीय जीवन जीवन-शैली का खूब चित्रण हुआ है। महानगरों ने स्त्रियों को आर्थिक रुप से मजबूत तो किया लेकिन उनकी महत्त्वाकांक्षाओं को भी बढ़ा दिया। महानगरीय जीवन की तमाम विडंबनाओं को प्रतिष्ठित साहित्यकार अनामिका इन शब्दों में अभिव्यक्त करती हैं- "निश्चित रूप से स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन तो आया है और यह परिवर्तन महानगरो और नगरों तक बहुत स्पष्ट रूप से देखा भी जा सकता है। लेकिन दूरदराज़ के गाँवो में आज भी स्त्रियों की दशा अच्छी नहीं है। आज स्त्री विमर्श के नाम पर नारेबाज़ी हो रही है कि देह की मुक्ति ही स्त्री की मुक्ति है वगैरह-वगैरह। मैं यह नहीं मानती। मेरा मानना है कि सबसे बड़ा बंधन अगर स्त्रियों के लिए कोई है तो वह संस्कारों से मुक्ति का है। मैंने ऐसी स्त्रियों को देखा है जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं लेकिन कोई निर्णय नहीं ले पातीं, जो ज़रूरी है क्योंकि वह संस्कारो से जकड़ी हुई हैं, तो संस्कारो से मुक्ति ही स्त्री मुक्ति का पहला और अनिवार्य क़दम है।[1] 'यही सच है' महानगरों में रह रहे दो पुरुषों के प्रेम में फंसी स्त्री दीपा की कहानी है जिसके लिए अपना कैरियर और प्रेम दोनों महत्त्वपूर्ण है। 'यही सच है' की नायिका दीपा यह समझ चुकी है कि आर्थिक संपन्नता ही स्त्री जीवन का मजबूत आधार है इसलिए वह अपने वर्तमान के प्रेम का चुनाव करती है। भावना में बहकर अपने पूर्व प्रेमी को नहीं अपनाती।

प्रश्नों की स्वयं जांच करना-

3.1 सही/गलत पर निशान लगाइए-

(i) मन्नू भण्डारी की कहानियों में सम्बन्धों की टूटन नहीं दिखाई देती। (सही/गलत)

(ii) संस्कारों से मुक्ति ही स्त्री-मुक्ति का पहला और अनिवार्य कदम है। (सही/गलत)

(iii) 'यही सच है' कहानी की नायिका दीपा अपने अतीत के प्रेम का चुनाव करती है। (सही/गलत)

3.2 कोष्ठक में दिए गए शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(i) मन्नू भण्डारी की अधिकतर कहानियाँ और उपन्यास ..... त्रासदी की अंतर्कथा है। (स्त्री/पुरूष)

(ii) मन्नू भण्डारी के अनुसार आज की ..... व्यवस्था स्त्री को उडान भरने से पहले ही उसके पर काट देती है। (पितृसत्तात्मक/मातृसत्तात्मक)

(iii) मन्नू भण्डारी की कहानियों में ..... जीवन-शैली का खूब चित्रण हुआ है। (ग्रामीण/नगरीय)

---

[1] हिंदी समय डॉट कॉम

4.0 'यही सच है' कहानी का कथ्य

'यही सच है' दो पुरुषों के प्रेम में भावनात्मक रूप से उलझी स्त्री 'दीपा' की मनःस्थिति का बयान है जिसे वह अपनी डायरी में लिखती है। कहानी की नायिका 'दीपा' अपने जीवन की घटनाओं को डायरी में लिखती है। यहाँ यह देखना आवश्यक है कि हिंदी कहानी में ऐसा शायद पहली बार हो रहा था जब कोई स्त्री अपनी प्रेमकथा को डायरी में लिख रही थी। स्त्री मुक्ति का यह नया संदर्भ है जब उसे अपना कुछ भी लिखकर यह डर नहीं है कि कोई और पढ़ लेगा तो क्या सोचेगा? या उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी? अपने अतीत और वर्तमान के प्रेम में खोयी स्त्री की मानसिक स्थिति इस कहानी का प्राण-तत्त्व है। हिंदी के आलोचकों ने इसे डायरी शैली की मजबूत कहानी माना है-"'यही सच है' डायरी शैली में लिखी गई उत्कृष्ट कोटि की कहानी है जो कथ्य और अभिव्यक्ति दोनों ही दृष्टियों से पाठकीय चेतना पर अमिट प्रभाव छोड़ती है। प्रेम की पारस्परिक त्रिकोणात्मक स्थिति को आधुनिक नारी और सामाजिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में बिल्कुल नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि यहाँ संजय, निशीथ और दीपा का प्रेम त्रिकोण है, किंतु इन दोनों पुरुषों के द्वंद्व के बीच अपने को, अपने प्रेम के अस्तित्व को तलाशती एक बेबस नारी को देखा जा सकता है। दीपा बेबस है सिर्फ अपने मन से, अपनी सामाजिक स्थितियों के कारण नहीं। इस प्रकार इस कहानी में संजय और निशीथ दोनों के बीच प्रेम का सच नारी मन की विवशता के साथ उजागर हुआ है।"[2]

कहानी शुरू होती है, कहानी की नायिका दीपा से जो कानपुर में रहती है। कहानी का विकास तब होता है जब उसे अपनी नौकरी के इंटरव्यू के सिलसिले में कलकत्ता जाना पड़ता है। इत्तेफाक से कलकत्ता में उसकी मुलाक़ात उसके पूर्व प्रेमी निशीथ से होती है। अचानक वह निशीथ को देखकर हैरान होती है क्योंकि निशीथ ने अपनी महत्वाकांक्षा के लिए दीपा को छोड़ दिया था। निशीथ को लेकर उसके मन में कई तरह की कड़वाहट है, इसलिए उसे वहाँ देखकर दीपा को अजीब सी उलझन होती है। यही उलझन कहानी में द्वंद्व पैदा करती है। दीपा अपने वर्तमान में संजय से प्रेम करती है जो उसकी ज़िंदगी में तब आया जब वह निशीथ के द्वारा ठुकराए जाने से टूट चुकी थी। संजय उसका हर तरह से ख्याल रखता है। उसे प्रेम करता है। संजय और दीपा के प्रेम के कई दृश्य इस कहानी में मार्मिक ढंग से चित्रित हुए हैं। कहानी के आरंभ में भी बेचैन मन से दीपा संजय के आने का इंतज़ार कर रही है। संजय को अपने काम की वजह से देर हो रही है। मन ही मन दीपा उस पर गुस्सा

[2] अनामिका, हिंदी समय डॉट कॉम

हो रही है लेकिन जैसे ही उसके आने की आहट आती है उसका मन प्रेम में भीग जाता है। इस मनःस्थिति का वर्णन मन्नू भण्डारी ने इस प्रकार से किया है-“खट-खट-खट वही परिचित पद-ध्वनि! तो आ गया संजय। मैं बरबस ही अपना सारा ध्यान पुस्तक में केंद्रित कर लेती हूँ। रजनीगंधा के ढेर-सारे फूल लिए संजय मुस्कुराता-सा दरवाजे पर खड़ा है। मैं देखती हूँ, पर मुस्कुराकर स्वागत नहीं करती। हँसता हुआ वह आगे बढ़ता है और फूलों को मेज पर पटककर, पीछे से मेरे दोनों कंधे दबाता हुआ पूछता है, "बहुत नाराज हो?"....रजनीगंधा की महक से जैसे सारा कमरा महकने लगता है।”[3] संजय जानता है कि दीपा को रजनीगंधा बहुत पसंद है, अगर गुस्सा होगी तो मान जाएगी। दीपा भी जानती है कि संजय जान-बूझ कर देर नहीं करता है। दोनों एक दूसरे के मन के भाव से परिचित हैं लेकिन कहानी की विशेषता यह होती है कि वह स्थिति में तनाव पैदा कर पाठकों के लिए रोचकता पैदा करती है। मन्नू भण्डारी ने दीपा की बनावटी नाराजगी को खूबसूरती से अभिव्यक्त किया है। संजय पूछता है कि ‘नाराज हो’ तो वह कहती है- "मुझे क्या करना है नाराज होकर?"[4] अगले ही पल संजय अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए नाटकीय क्रिया करता है जिसे दीपा इन शब्दों में व्यक्त करती है- “वह कुर्सी सहित मुझे घुमाकर अपने सामने कर लेता है, और बड़े दुलार के साथ ठोड़ी उठाकर कहता, "तुम्हीं बताओ क्या करता? क्वालिटी में दोस्तों के बीच फँसा था। बहुत कोशिश करके भी उठ नहीं पाया। सबको नाराज करके आना अच्छा भी नहीं लगता।"[5]

‘यही सच है’ में नायिका दीपा संभवत: हिंदी कहानी की पहली ऐसी नायिका है जिसके पास पुरुष चुनने का विकल्प है। “यह कहानी परंपरागत प्रेम-संबंधों से अलग हटकर लिखी गई है। जहाँ पहले की प्रेम कहानियों में आदर्श व नैतिक मूल्य दिखाई पड़ते हैं, वहीं मन्नू भंडारी की इस कहानी में सर्वथा उसका अभाव है। दीपा के प्रेम का दर्शन बहुत कुछ उपभोक्तावादी संस्कृति से जुड़ा हुआ है। प्रेम में भोग का तर्क ही नहीं होता, उसमें त्याग का एक स्थायी आदर्श भी होता है। प्रेम के क्षणों में केवल तन ही सक्रिय नहीं होता, बल्कि हृदय और मन भी सक्रिय होता है। यही कारण है कि प्रेम विषयक कहानियों में त्याग और बलिदान का एक आदर्श मिलता है।”[6]

इस कहानी में नायिका मानसिक रूप से अपने अतीत और भविष्य के प्रेमियों का चुनने के लिए निर्णय नहीं ले पा रही है। स्त्री-जीवन की यह सहज प्रवृत्ति है। उसके पास जब

---

[3] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-12

[4] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-12

[5] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-12

[6] अनामिका, हिंदी समय डॉट कॉम

दो पुरुषों के विकल्प होते हैं तो वह निर्णय लेने में समय लेती है। दीपा के साथ भी यही हो रहा है। दीपा कलकत्ता में अपनी मित्र इरा के पास पहुँचती है तो इरा की व्यस्तता के कारण निशीथ उसकी मदद करता है। वह अपने पूर्व प्रेमी निशीथ से मिलती है। हालांकि वह जानती है कि निशीथ इसी शहर में है लेकिन उसका मिलना संयोग ही था। यह संजय भी जानता है कि निशीथ कलकत्ता में है। इसका जिक्र कहानी के आरंभ में है। मन्नू भण्डारी मुश्किल क्षणों को भी सहजता से प्रस्तुत करती हैं–यही उनकी विशेषता है। कहानी की एक घटना में इसे देखा जा सकता है। दीपा को कलकत्ता जाना है। कलकत्ता उसके लिए अनजान शहर है। वह संजय से चिंता व्यक्त करते हुए कहती है- "पर कलकत्ता तो मेरे लिए एकदम नई जगह है। वहाँ इरा को छोड़कर मैं किसी को जानती भी नहीं। अब उन लोगों की कोई जान-पहचान हो तो बात दूसरी है"[7] संजय उसको छेड़ते हुए कहता है- "और किसी को नहीं जानतीं?" फिर मेरे चेहरे पर नजरें गड़ाकर पूछता है, "निशीथ भी तो वहीं है?"[8] अब यहाँ अपने वर्तमान प्रेम के सामने स्त्री के स्वाभिमान को व्यक्त करना है। स्त्री के लिए सबसे ज्यादा मुश्किल यही होता है जब उसे अपने अतीत और वर्तमान दोनों के प्रेम से टकराना पड़ता है। लेकिन मन्नू भण्डारी की नायिकाएँ मजबूत होती हैं। भावुक होकर भी अपने भविष्य के प्रति सचेत होती हैं। दीपा, संजय को जवाब देते हुए कहती है- "होगा, मुझे क्या करना है उससे?"[9] संजय फिर छेड़ता है- "कुछ नहीं करना?" संजय के इतना कहते ही दीपा भड़क जाती है- "देखो संजय, मैं हजार बार तुमसे कह चुकी हूँ कि उसे लेकर मुझसे मजाक मत किया करो! मुझे इस तरह का मजाक जरा भी पसंद नहीं है!"[10] स्त्री के साथ यही होता है। वह जब भावना में होती है तो या बहुत सहज हो जाती है या बहुत कठोर क्योंकि उसको बीच का रास्ता नहीं सूझता। दीपा के साथ ऐसा ही होता है।

निशीथ वहाँ जब दीपा से मिलता है तो उससे वह दुबारा प्रेम करने लगती है। दीपा एक दिन जब इरा के साथ कॉफी पीने जाती है तो वहाँ निशीथ मिलता है। जब वह लंबे समय के बाद निशीथ के साथ समय बिताती है तो उसे अपना पुराना प्यार याद आ जाता है। निशीथ की गतिविधियाँ बताती हैं कि शायद उसे अपने व्यवहार पर अफ़सोस है यही कारण है दीपा को निशीथ का प्रेम सच्चा लगते लगता है।उसे लगता है निशीथ ने जो किया उसे उसका पछतावा है इसलिए उसके अंदर सो चुका प्रेम फिर से जाग जाता है।अगर यह

---

[7] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -13

[8] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -13

[9] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -13

[10] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -14

मान लिया जाए कि पहला प्रेम भूला नहीं जाता तो निशीथ के लिए उसके मन में जो भावनाएँ उभरती हैं वह अनायास नहीं हैं। बल्कि कहीं न कहीं वह निशीथ के साथ बिताए अपने व्यक्तिगत पलों को याद करके भावुक हो जाती है। उसकी इस मनःस्थिति का भावप्रवण चित्रण मन्नू भण्डारी ने किया है। चूंकि यह कहानी डायरी शैली में है इसलिए नायिका का सारा संवाद भी स्वयं से है। दीपा खुद डायरी में लिख अपने विवरण को व्यक्त कर रही है। मन्नू भण्डारी ने बड़ी तन्मयता और विस्तार से दीपा और निशीथ के वर्षों बाद के मिलन को लिखा है, जिसे दीपा कह रही है-"शाम को इरा मुझे कॉफी-हाउस ले जाती है। अचानक मुझे वहाँ निशीथ दिखाई देता है। मैं सकपकाकर नजर घुमा लेती हूँ। पर वह हमारी मेज पर ही आ पहुँचता है। विवश होकर मुझे उधर देखना पड़ता है, नमस्कार भी करना पड़ता है, इरा का परिचय भी करवाना पड़ता है। इरा पास की कुर्सी पर बैठने का निमंत्रण दे देती है। मुझे लगता है, मेरी साँस रुक जाएगी।

"कब आईं?"

"आज सवेरे ही।"

"अभी ठहरोगी? ठहरी कहाँ हो?"[11]

यहाँ यह देखना दिलचस्प है कि दीपा मन से तो निशीथ को अनदेखा करने की कोशिश कर रही है लेकिन उसका हृदय लगातार उसी के बारे में सोच रहा है- "जवाब इरा देती है। मैं देख रही हूँ, निशीथ बहुत बदल गया है। उसने कवियों की तरह बाल बढ़ा लिए हैं। यह क्या शौक चर्राया? उसका रंग स्याह पड़ गया है। वह दुबला भी हो गया है।"[12] अगले ही पल दीपा जो सोचती है वह अधिक महत्त्वपूर्ण है-"पूरे तीन साल बाद निशीथ का यों मिलना! न चाहकर भी जैसे सारा अतीत आँखों के सामने खुल जाता है। बहुत दुबला हो गया है निशीथ! लगता है, जैसे मन में कहीं कोई गहरी पीड़ा छिपाए बैठा है। मुझसे अलग होने का दुख तो नहीं साल रहा है इसे?[13]

वह निशीथ के बारे में लगातार अच्छा सोचने की कोशिश कर रही है क्योंकि उसे निशीथ अभी लाचार सा दिख रहा है। दीपा को लगता है निशीथ ने अपना यह हाल इसलिए बना लिया क्योंकि उसे अपने किए पर पछतावा है। लेकिन अगले ही पल उसे यह सब कल्पना लगने लगती है क्योंकि पुराने दिनों की यादें निशीथ के लिए उसके मन में कड़वाहट भर देती है। निशीथ का मितभाषी स्वभाव उसकी कड़वाहट को और बढ़ा रहा है। एक स्थान

---

[11] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -15

[12] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -15

[13] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -15

पर कहानीकार ने इसका जिक्र बड़ी तन्मयता से किया है-"एकाएक ही मेरा मन कटु हो उठता है। यही तो है वह व्यक्ति जिसने मुझे अपमानित करके सारी दुनिया के सामने छोड़ दिया था, महज उपहास का पात्र बनाकर! ओह, क्यों नहीं मैंने उसे पहचानने से इनकार कर दिया? जब वह मेज के पास आकर खड़ा हुआ, तो क्यों नहीं मैंने कह दिया कि माफ कीजिए, मैं आपको पहचानती नहीं? जरा उसका खिसियाना तो देखती! वह कल भी आएगा। मुझे उसे साफ-साफ मना कर देना चाहिए था कि मैं उसकी सूरत भी नहीं देखना चाहती, मैं उससे नफरत करती हूँ!"[14]

मन्नू भण्डारी की नायिकाएँ मन से भी मजबूत होती हैं। स्त्रियोचित ममता उनके अंदर अवश्य होती है लेकिन जब अपने भविष्य और जीवन की बात आती है तो वह कठोर हो जाती हैं। भावना की जगह यथार्थ से जुड़कर फैसला लेती हैं। दीपा भी सोचती है- "कल्पना चाहे कितनी भी मधुर क्यों न हो, एक तृप्ति-युक्त आनंद देनेवाली क्यों न हो, पर मैं जानती हूँ, यह झूठ है। यदि ऐसा ही था तो कौन उसे कहने गया था कि तुम इस संबंध को तोड़ दो? उसने अपनी इच्छा से ही तो यह सब किया था।"[15]

मन्नू भण्डारी की इस कहानी ने स्त्री मन की तमाम स्थितियों को जैसे जीवंत कर दिया। इस कहानी ने मन्नू भण्डारी को स्थापित तो किया ही साथ ही नई कहानी आंदोलन में स्त्री मन के अंतर्विरोधों की अभिव्यक्ति को एक नई दिशा दी । स्त्री मनोविज्ञान की इतनी सहज अभिव्यक्ति बहुत कम ही कहानियों में मिलती है। दीपा लगातार स्वयं से ही आत्मसंघर्ष कर रही है। उसे अपनी स्थिति न इधर न उधर की लग रही है। निशीथ के और अपने संबंधों को लेकर वह अजीब पशो-पेश में है। वह डायरी में यह सारा विवरण लिखती है- "विचित्र स्थिति मेरी हो रही थी। उसके इस अपनत्व-भरे व्यवहार को मैं स्वीकार भी नहीं कर पाती थी, नकार भी नहीं पाती थी।"[16]

वह निशीथ को संजय के बारे में सब कुछ बता देना चाहती है लेकिन उसे यह भी डर है कि निशीथ कहीं संजय के बारे में जानकार उसमें रुचि लेना बंद न कर दे। स्त्रियाँ हमेशा भावनात्मक कोने को खुला छोड़ कर रखती हैं। खासकर प्रेम के मामले में। एक स्त्री होने के नाते मैं कह सकती हूँ कि स्त्री प्रेम के सिवा कुछ चाहती भी नहीं। उसे अपना अपमान भी उतना बुरा नहीं लगता जितना प्रेम में छला जाना बुरा लगता है। दीपा इसी मनःस्थिति की शिकार है। वह निशीथ को संजय के बारे में सब बताना चाहती है लेकिन उसकी मानसिक

---

[14] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -13

[15] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -13

[16] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -16

स्थिति को आप खुद महसूस कीजिए- "सारा दिन मैं उसके साथ घूमती रही, पर काम की बात के अतिरिक्त उसने एक भी बात नहीं की। मैंने कई बार चाहा कि संजय की बात बता दूँ... पर बता नहीं सकी। सोचा, कहीं वह सुनकर यह दिलचस्पी लेना कम न कर दे। उसके आज-भर के प्रयत्नों से ही मुझे काफी उम्मीद हो चली थी। यह नौकरी मेरे लिए कितनी आवश्यक है, मिल जाए तो संजय कितना प्रसन्न होगा, हमारे विवाहित जीवन के आरंभिक दिन कितने सुख में बीतेंगे![17] धीरे-धीरे दीपा के मन में निशीथ के के लिए प्रेम का भाव जागने लगता है। उसे अपने अतीत का प्रेम फिर से खुद पर हावी होता दिखता है- "ढलते सूरज की धूप निशीथ के बाएँ गाल पर पड़ रही थी और सामने बैठा निशीथ इतने दिन बाद एक बार फिर मुझे बड़ा प्यारा-सा लगा।"[18]

दीपा के मन में निशीथ के लिए उमड़े प्रेम का भी एक कारण है। वह महसूस कर रही है कि निशीथ अब फिर से दीपा से प्रेम करने लगा है। उसकी सफलता पर वह उससे ज्यादा खुश है। शायद उसके मन में यह भाव आ गया है कि दीपा अब यहीं रुक जाएगी। शायद उसके प्रेम को पुनः स्वीकार कर ले। दीपा कुछ उसकी और कुछ अपनी कल्पना से अपने मन को समझाने की कोशिश करती है। लेकिन अगले ही पल अतीत में निशीथ से मिले प्रतीकार और वर्तमान में संजय से मिले प्रेम को याद कर उसका मन शून्य हो जाता है, जिसे मन्नू भण्डारी ने विस्तार से लिखा है। कहानी का यह हिस्सा बहुत महत्त्वपूर्ण है- "मैंने देखा, मुझसे ज्यादा वह प्रसन्न है। वह कभी किसी का अहसान नहीं लेता, पर मेरी खातिर उसने न जाने कितने लोगों को अहसान लिया। आखिर क्यों? क्या वह चाहता है कि मैं कलकत्ता आकर रहूँ उसके साथ, उसके पास? एक अजीब-सी पुलक से मेरा तन-मन सिहर उठता है। वह ऐसा क्यों चाहता है? उसका ऐसा चाहना बहुत गलत है, बहुत अनुचित है! मैं अपने मन को समझाती हूँ, ऐसी कोई बात नहीं है, शायद वह केवल मेरे प्रति किए गए अन्याय का प्रतिकार करने के लिए यह सब कर रहा है! पर क्या वह समझता है कि उसकी मदद से नौकरी पाकर मैं उसे क्षमा कर दूँगी, या जो कुछ उसने किया है, उसे भूल जाऊँगी? असंभव! मैं कल ही उसे संजय की बात बता दूँगी।"[19]

कहानी की नायिका दीपा किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने में असफल है क्योंकि वह दोनों में अपना भविष्य देख रही है। निशीथ भी शायद उसके अंदर अपने लिए चल रहे सॉफ्ट कॉर्नर तक पहुँच गया है। उसे भी उम्मीद है कि दीपा उसका प्रेम स्वीकार कर लेगी। मन्नू

---

[17] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -16

[18] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -16

[19] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -16

भण्डारी ने यह चित्रण भी बहुत मार्मिकता से व्यक्त किया है-"सीढ़ियों पर निशीथ हल्की-सी मुस्कुराहट के साथ कहता है, "इस साड़ी में तुम बहुत सुंदर लग रही हो।"[20] स्त्री अपने प्रति आने वाले प्रेम को अस्वीकार नहीं कर पाती। दीपा निशीथ द्वारा की गयी तारीफ के लिए लिखती है- "मेरा चेहरा तमतमा जाता है, कनपटियाँ सुर्ख हो जाती हैं। मैं चुपचाप ही इस वाक्य के लिए तैयार नहीं थी। यह सदा चुप रहनेवाला निशीथ बोला भी तो ऐसी बात।"[21]

मन्नू भण्डारी ने कहानी में ऐसी कई स्थितियों का वर्णन चित्रात्मक रूप में किया है लेकिन एक दृश्य कहानी को चरम पर ले जाता है जब वह निशीथ के प्रति पूरी तरह सोचने लगती है। वह चाहने लगती है कि निशीथ उसे छूए। उससे बात करे। यह दृश्य कहानी में अजीब तनाव पैदा करता है क्योंकि संजय के प्रति पाठकों के मन में एक सहज भाव जाग उठा है। संजय के प्रेम और समर्पण में ईमानदारी है जो पाठकों को आकर्षित करती है लेकिन मन्नू भण्डारी ने निशीथ के लिए पुनः भाव जगा दिया है। समाज में स्त्रियों के साथ निशीथ जैसी घटनाएँ होती हैं लेकिन संजय जैसे कम लोग होते हैं। दीपा अब पूरी तरह से निशीथ के बारे में सोच रही है-"मन में प्रचंड तूफान! पर फिर भी निर्विकार भाव से मैं टैक्सी में आकर बैठती हूँ फिर वही मौन, वही दूरी। पर जाने क्या है कि मुझे लगता है कि निशीथ मेरे बहुत निकट आ गया है, बहुत ही निकट! बार-बार मेरा मन करता है कि क्यों नहीं निशीथ मेरा हाथ पकड़ लेता, क्यों नहीं मेरे कंधे पर हाथ रख देता? मैं जरा भी बुरा नहीं मानूँगी, जरा भी नहीं! पर वह कुछ भी नहीं करता।"[22] दीपा के मन में चल रहे यह द्वंद्व बताते हैं कि मन्नू भण्डारी अपने पात्रों को नाटकीय नहीं बनाती हैं बल्कि उन्हें सहज भाव से उंसके व्यवहार के अनुकूल चलने देती हैं।

कहानी दीपा के मन में चल रहे अंतर्विरोधों से आगे बढ़ती है। वह वापस कानपुर लौट आयी है। निशीथ के प्रति उसका प्रेम प्रगाढ़ हो चुका है। निशीथ के प्रेम ने उसके हृदय में पुनः अपना बीज रोप दिया है जिसका अंकुरण भर होना है। अचानक एक दिन उसे निशीथ का पत्र मिलता है-

प्रिय दीपा,

तुम अच्छी तरह पहुँच गई, यह जानकर प्रसन्नता हुई। तुम्हें अपनी नियुक्ति का तार तो मिल ही गया होगा। मैंने कल ही इरा जी को फोन करके सूचना दे दी थी और उन्होंने बताया था कि तार दे देंगी। ऑफिस की ओर से भी सूचना मिल जाएगी।

---

[20] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -17

[21] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -17

[22] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -18

इस सफलता के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करना। सच, मैं बहुत खुश हूँ कि तुम्हें यह काम मिल गया! मेहनत सफल हो गई। शेष फिर।

शुभेच्छु,

निशीथ[23]

दीपा पत्र खत्म कर बेचैन हो जाती है, उसका मन है कि और कुछ लिखा होता, शायद यह भी लिखा होता कि- “मैं तुमसे प्यार करने लगा हूँ। दीपा पत्र पढ़कर बैठ गई है। अपनी डायरी में इस घटना को वह लिख रही है- बस? धीरे-धीरे पत्र के सारे शब्द आँखों के आगे लुप्त हो जाते हैं, रह जाता है केवल, "शेष फिर!"...तो अभी उसके पास 'कुछ' लिखने को शेष है? क्यों नहीं लिख दिया उसने अभी? क्या लिखेगा वह?[24]

दीपा को यहाँ एक उम्मीद दिखती है। वह अतीत के प्रेम में डूबी हुई अपने वर्तमान और भविष्य से बेखबर है। वह बार-बार निशीथ के बारे में सोचती जा रही है, तभी संजय की आवाज़ गूँजती है- "दीप!"[25]

संजय की आवाज़ उसे अतीत से बाहर निकाल देती है। वह सामने संजय को देखकर अचकचा जाती है। यहाँ स्त्री के आंतरिक द्वंद्व को मन्नू भण्डारी बहुत तन्मयता से व्यक्त करती हैं। दीपा अपने मन की उलझनों से बाहर निकलकर संजय की ओर देखती है। अचानक उसे अपने वर्तमान और अतीत के बीच की खाई का पता चल जाता है। उसे समझ आ जाता है कि उसका वर्तमान ही उसका सच है। दीपा लिखती है- “मैं मुड़कर दरवाजे की ओर देखती हूँ। रजनीगंधा के ढेर सारे फूल लिए मुस्कुराता-सा संजय खड़ा है। एक क्षण मैं संज्ञा-शून्य-सी उसे इस तरह देखती हूँ, मानो पहचानने की कोशिश कर रही हूँ। वह आगे बढ़ता है तो मेरी खोई हुई चेतना लौटती है, और विक्षिप्त-सी दौड़कर उससे लिपट जाती हूँ।”[26]

संजय दीपा की इस हरकत से हैरान उसे देखता हुआ पूछता है- "क्या हो गया है तुम्हें, पागल हो गई हो क्या?"[27]

दीपा कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं है। उसे अपने अंदर एक बेचैनी महसूस होती है। जिस अतीत के प्रति उसका आकर्षण अभी कुछ देर पहले बढ़ता जा रहा था। वह केवल

---

[23] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -18

[24] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -18

[25] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -19

[26] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -19

[27] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -19

भ्रम था। संजय को सामने पाकर उसका भ्रम टूट जाता है-"तुम कहाँ चले गए थे संजय?" और मेरा स्वर टूट जाता है। अनायास ही आँखों से आँसू बह चलते हैं।"[28]

संजय परेशान है। उसे दीपा की यह सारी गतिविधियाँ समझ नहीं आती क्योंकि दीपा ने उससे कभी ऐसा व्यवहार शायद पहले नहीं किया था। दीपा को सामान्य करने के लिए प्यार से पूछता है- "क्या हो गया? कलकत्ता का काम नहीं मिला क्या? मारो भी गोली काम को। तुम इतनी परेशान क्यों हो रही हो उसके लिए?"[29]

दीपा नि:स्तब्ध है। उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं है, क्योंकि जिस प्रेम में अभी वह कुछ देर पहले डूबकर उसे फिर से जीवित होते देख रही थी वह केवल एक छलावा था। सुंदर कल्पना थी लेकिन दीपा जीवन का यथार्थ समझ चुकी थी। उसने संजय को सामने पाकर अपने वर्तमान के प्रेम को सच मानना उचित समझा। वह निर्णय लेती है कि यही (संजय) का प्यार ही उसके जीवन का सच है। संजय के बार-बार पूछने वाली घटना को वह डायरी में लिखती है- "पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस, मेरी बाँहों की जकड़ कसती जाती है, कसती जाती है। रजनीगंधा की महक धीरे-धीरे मेरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।...और हम दोनों एक-दूसरे के आलिंगन में बँधे रहते हैं-चुंबित,प्रति-चुंबित!"[30]

प्रश्नों की स्वयं जांच करना

4.1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'ना' में दीजिए-

(i) हिंदी कहानी के लिए साठ का दशक विशेष महत्त्व रखता है। (.....)

(ii) 'यही सच है' पुरुष मन की अंतर्कथा है। (.....)

4.2 कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(i) कहानी के आरंभ में दीपा ..... का इंतज़ार करती है।(समीर, राजीव, संजय)

(ii) मन्नू भण्डारी.....आंदोलन की प्रमुख कहानीकार हैं।(सचेतन कहानी,नई कहानी, अकहानी)

(iii) निशीथ.....में रहता है। (कानपुर, कलकत्ता, मुंबई)

---

[28] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -19

[29] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -19

[30] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ -19

(iv) .....की महक से जैसे सारा कमरा महकने लगता है।(रजनीगंधा, चमेली, अपराजिता)

5.0 'यही सच है' कहानी का शिल्प

कहानी की पृष्ठभूमि छोटी लेकिन अर्थपूर्ण होती है। जीवन के मानवीय सत्यों का उद्घाटन करना ही कहानी है। अपने कथ्य में कहानी जितनी मजबूत होती है उतना ही उसका शिल्प भी बेहतर होना चाहिए क्योंकि कहानीकार अगर कहानी के शिल्प को नहीं समझता है तो रोचकता पैदा नहीं कर पाएगा। कहानी फिर कथा बनकर रह जाएगी जिसका कोई आदि और अंत नहीं होता। मन्नू भण्डारी मंझी हुई कथाकार हैं। उनकी कहानियों का शिल्प ही उन्हें अपने समकालीनों से अलग करता है। 'यही सच है' कहानी में शिल्प की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि उसमें बाह्य घटनाओं के साथ ही पात्रों की आंतरिक मनःस्थिति को भी चित्रात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि यह कहानी डायरी फॉर्म में है। कहानी की मुख्य नायिका दीपा अपने साथ होने वाली घटनाओं को स्वयं लिख रही है। हिंदी कहानी में मन्नू भण्डारी ने पहली बार इस शैली का प्रयोग किया है जो कि कहानी को रोचक बनाता है। नई कहानी आंदोलन में कहानीकार के सामने एक चुनौती थी कि वह शिल्प में कुछ नया करे। मन्नू भण्डारी ने अपनी हर कहानी में कुछ नया ही किया है। 'यही सच है' में भी वह डायरी शैली के माध्यम से नए तरह की बुनावट सामने लाती हैं जिसमें दीपा कहानी की मुख्य पात्र भी है और मॉडरेटर भी। नई कहानी में इस तरह का प्रयोग पहले कभी नहीं हुआ- 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना कुछ विशेष प्रयोगों के कारण अत्यंत चर्चित रही है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है- डायरी शैली का प्रयोग। नई कहानी की प्रयोगशील प्रवृत्तियों में एक यह भी थी कि डायरी के ढाँचे में कहानी लिखी गई। यह कहानी वस्तुत: दीपा की डायरी के कुछ पन्नों का संकलन मात्र है जो क्रमश: कानपुर, कलकत्ता और फिर कानपुर में लिखे गए हैं। इसलिये, स्वाभाविक तौर पर यह कहानी उत्तम पुरुष शैली में रचित है और प्रमुख चरित्र दीपा 'मैं' के रूप में उपस्थित है।

डायरी लेखन में यह माना जाता है कि व्यक्ति जो भी लिखेगा सत्य लिखेगा। इसलिए यह कहा जा सकता है कि मन्नू भण्डारी स्त्री जीवन का सत्य लिखना चाहती थीं। पूरी कहानी में मन्नू भण्डारी ने दीपा को आदर्शवादी या नैतिकतावादी बनाने का प्रयास नहीं किया है लेकिन उसे अवसरवादी भी नहीं बनने दिया है। अपने भविष्य के प्रति सचेत कामकाजी महिला के रूप में दीपा को जितनी जरूरत नौकरी की है उतनी ही जरूरत उसे भावनात्मक

संबल की भी है। दीपा को कहानीकार ने जबरन देवी बनाने का भी प्रयास नहीं किया है। वह जब निशीथ से मिलती है तो उसके मन में जो भाव आता है उसे ही डायरी में लिखती है। झूठ लिखकर या निशीथ के सामने नाटक कर खुद को बरगलाने की कोशिश नहीं करती है। स्त्री मन के अंतर्विरोधों को इतने स्पष्ट रूप से पहले अभिव्यक्त नहीं किया- "डायरी शैली का एक विशेष लाभ इसकी चरित्र-योजना में दिखाई पड़ता है। चूँकि डायरी लिखते समय व्यक्ति पूरी ईमानदारी का परिचय देता है और बाह्य जीवन में नहीं कही जा सकने वाली बातें भी खुलकर लिखता है, इसलिये दीपा का चरित्र मनोविज्ञान की उन सूक्ष्मताओं को छू सका है जो शायद नई कहानी में भी दुर्लभ है। इसी साफगोई का परिणाम है कि कुछ पारंपरिक समीक्षक दीपा के चरित्र को नैतिक रूप से उचित नहीं मानते। डायरी शैली से एक समस्या यह उत्पन्न हुई कि एक चरित्र का पूरा सच उभर गया किंतु बाकी चरित्रों (निशीथ, संजय आदि) के वही पक्ष उभरे जो बाह्य जीवन में व्यक्त होते हैं।"

निश्चित रूप से 'यही सच है' की भाषा अनूठी है। उसमें भावावेग है। काव्यात्मकता है जो पाठकों को कभी दीपा की साफगोई से जोड़ती है तो कभी निशीथ की मितभाषिता से। संजय का निश्छल और सहज प्रेम जिस भाषा में व्यक्त हुआ है वह स्त्री-कथा साहित्य की दृष्टि से नई भाषा है। पहले साहित्य में स्त्री की भाषा में इतनी स्पष्टता नहीं थी। स्त्रियोचित व्यवहार कहानी में आ ही जाता है। दीपा उस बनावटी व्यवहार से बाहर निकल अपने लिए उस दुनिया का चुनाव करती है जो उसके लिए स्वाभिमान से भरी हो। संजय ने उसे जो प्रेम दिया है उसे वह धोखा नहीं देना चाहती है क्योंकि वह खुद धोखा खा चुकी है। इस कहानी के चरित्र वैसे बड़े सहज हैं पर वह जो दिखते हैं,वह हैं नहीं। उनके अंदर एक और दुनिया है लेकिन वह यथार्थ से परिचित है- "जहाँ तक शेष शिल्पगत तत्त्वों का प्रश्न है, वे नई कहानी की प्रतिनिधि विशेषताओं से मिलते-जुलते हैं। इसकी भाषा सघन अनुभूति प्रधान भाषा है। घटनाओं और वर्णनों की कमी तथा चिंतन-मनन-विश्लेषण की अधिकता ने कथानक के विन्यास को तोड़ा है जो अन्य नई कहानियों की भी विशेषता है। चरित्र योजना की खासियत यह है कि दीपा के चेतन और अवचेतन मन में निरंतर चलने वाले द्वंद्व को इसमें उभारा गया है।"

मन्नू भण्डारी अपनी कहानियों में परिवेश को पूरा महत्त्व देती हैं। आस-पास का जीवन, रहन-सहन, प्रकृति का चित्रण उनके शिल्प को प्रामाणिक बनाता है। 'यही सच है' में वह संजय की प्रतीक्षा कर रही दीपा के अंदर चल रहे आंतरिक ऊहा-पोह को व्यक्त करने के लिए पहले उस तरह का माहौल बनाती हैं। कहानी के आरंभ में ही वह लिखती हैं- "सामने आँगन में फैली धूप सिमटकर दीवारों पर चढ़ गई और कंधे पर बस्ता लटकाए नन्हे-नन्हे

बच्चों के झुंड-के-झुंड दिखाई दिए, तो एकाएक ही मुझे समय का आभास हुआ। घंटा भर हो गया यहाँ खड़े-खड़े और संजय का अभी तक पता नहीं! झुँझलाती-सी मैं कमरे में आती हूँ। कोने में रखी मेज पर किताबें बिखरी पड़ी हैं, कुछ खुली, कुछ बंद। एक क्षण मैं उन्हें देखती रहती हूँ, फिर निरुद्देश्य-सी कपड़ों की अलमारी खोलकर सरसरी-सी नजर से कपड़े देखती हूँ। सब बिखरे पड़े हैं। इतनी देर यों ही व्यर्थ खड़ी रही; इन्हें ही ठीक कर लेती। पर मन नहीं करता और फिर बंद कर देती हूँ।"[31] इतना ही नहीं वह इन सारी क्रियाओं को करने के बीच संजय पर गुस्सा भी हो रही है। खुद से ही वार्तालाप की अद्भुत शैली मन्नू भण्डारी के पास है। अक्सर स्वयं से किया संवाद अलाप में बदल जाता है लेकिन यहाँ बड़ी रोचकता से प्रस्तुत हुआ है। दीपा सोचती है- "नहीं आना था तो व्यर्थ ही मुझे समय क्यों दिया? फिर यह कोई आज ही की बात है! हमेशा संजय अपने बताए हुए समय से घंटे-दो घंटे देरी करके आता है और मैं हूँ कि उसी क्षण से प्रतीक्षा करने लगती हूँ। उसके बाद लाख कोशिश करके भी तो किसी काम में अपना मन नहीं लगा पाती। वह क्यों नहीं समझता कि मेरा समय बहुत अमूल्य है; थीसिस पूरी करने के लिए अब मुझे अपना सारा समय पढ़ाई में ही लगाना चाहिए। पर यह बात उसे कैसे समझाऊँ![32]

रजनीगंधा के फूल दीपा को सुकून देते हैं क्योंकि उससे संजय का प्यार जुड़ा हुआ है। प्रेम में छली गई स्त्री जब दुबारा प्रेम करती है तो उसे पूरा जीना चाहती है। दीपा संजय के प्रेम को पूरा जीना चाहती है। मन्नू भण्डारी प्रेम से उपजे आह्लाद और संसाधनों को नयी तरह से प्रस्तुत करती हैं। दीपा के मन में चल रहे भाव को वह कोई न कोई आलंबन दे देती हैं। संजय नहीं है तो उसके द्वारा दिया गया फूल ही उसकी उपस्थिति है। दीपा के मन के भावों को गढ़ने और आकार देने के लिए वह कहानी को नया शिल्प देती हैं-"रात में सोती हूँ तो देर तक मेरी आँखें मेज पर लगे रजनीगंधा के फूलों को ही निहारती रहती हैं। जाने क्यों, अक्सर मुझे भ्रम हो जाता है कि ये फूल नहीं हैं, मानो संजय की अनेकानेक आँखें हैं, जो मुझे देख रही हैं, सहला रही हैं, दुलरा रही हैं। और अपने को यों असंख्य आँखों से निरंतर देखे जाने की कल्पना से ही मैं लजा जाती हूँ।"[33]

वातावरण और स्थान विशेष का वर्णन भी मन्नू भण्डारी इस तरह से करती हैं कि वह दृश्य मन में अंकित हो जाता है। दीपा जब कलकत्ता स्टेशन पहुँचती है तो उसकी मन:स्थिति का वर्णन वह इस प्रकार करती हैं- "गाड़ी जब हावड़ा स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर

---

[31] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-12

[32] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-12

[33] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-13

प्रवेश करती है तो जाने कैसी विचित्र आशंका, विचित्र-से भय से मेरा मन भर जाता है। प्लेटफॉर्म पर खड़े असंख्य नर-नारियों में मैं इरा को ढूँढ़ती हूँ। वह कहीं दिखाई नहीं देती। नीचे उतरने के बजाय खिड़की में से ही दूर-दूर तक नजरें दौड़ाती हूँ। आखिर एक कुली को बुलाकर, अपना छोटा-सा सूटकेस और बिस्तर उतारने का आदेश दे, मैं नीचे उतर पड़ती हूँ। उस भीड़ को देखकर मेरी दहशत जैसे और बढ़ जाती है। तभी किसी के हाथ के स्पर्श से मैं बुरी तरह चौंक जाती हूँ। पीछे देखती हूँ तो इरा खड़ी है।"[34]

कहानी की भाषा चित्रात्मक तो है ही कहीं-कहीं ध्वन्यात्मक भी है- "'टुन' की घंटी के साथ मीटर डाउन होता है और टैक्सी हवा से बातें करने लगती है।"[35]

इस प्रकार देखें तो 'यही सच है' का शिल्प नई कहानी आंदोलन को नई दिशा भी देता है। महिला कथाकारों में मन्नू भण्डारी का लेखन जितना स्पष्ट है, जीवन भी उतना ही खुला हुआ है। स्वयं उन्होंने जिसे प्रेम किया उसे कभी पारंपरिक या कानूनी रूप से नहीं छोड़ा। जीवन भर वही किया जो उन्हें अच्छा लगा। जो व्यक्ति अपने जीवन में इतना मुखर हो सकता है तो उसके साहित्य में पात्र कैसे दब्बू हो सकते हैं। दीपा भी वही करती है जो उसे ठीक लगता है।

प्रश्नों की स्वयं जांच करना-

5.1 निम्नलिखित कथनों पर सही/गलत के निशान लगाइए-

(1) कहानी की पृष्ठभूमि छोटी लेकिन अर्थपूर्ण होती है। (सही/गलत)

(2) मन्नू भण्डारी का जन्म 1950 में हुआ था। (सही/गलत)

(3) 'यही सच है' कहानी पर रजनीगंधा नाम से फिल्म भी बनी। (सही/गलत)

5.2 सही शब्द के चुनाव द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) दीपा के वर्तमान प्रेमी का नाम.....है। (संजय, निशीथ, इरा)

(2) यही सच है.....शैली में लिखी गई कहानी है। (कहानी, डायरी, नाटक)

(3) 'यही सच है' की नायिका कहाँ रहती है (कलकत्ता, दिल्ली, कानपुर)

अभ्यास के लिए प्रश्न

प्रश्न क-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1. नई कहानी आंदोलन में 'यही सच है' की क्या भूमिका है?

[34] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-15

[35] प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-16

2. यही सच की भाषा के बारे में विचार व्यक्त कीजिए?
3. मन्नू भण्डारी के साहित्य और जीवन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
4. 'यही सच है' कहानी में दीपा के अंतःद्वंद्व का कारण क्या है?
5. दीपा का चरित्र-चित्रण कीजिए।
6. संजय और निशीथ का चरित्र-चित्रण कीजिए।
7. 'यही सच है' कहानी के शिल्प के बारे में विस्तार से लिखिए।

प्रश्न ख निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताइए-

अंतर्विरोध, मार्मिक, महत्वाकांक्षा, द्वंद्व, परंपरागत, अतीत

प्रश्न ग निम्नलिखित वाक्यों का पदक्रम ठीक कीजिए

(1) निशीथ वह उससे मिलता है तो दुबारा प्रेम उससे वह करने लगती है।
(2) मन्नू भण्डारी का जन्म हुआ था 3 अप्रैल को।
(3) निशीथ दीपा का है प्रेमी पुराना।
(4) मन्नू भण्डारी की अंदर से नायिकाएँ मजबूत होती हैं।